अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

तत्त्वज्ञान (वर्ष-2018)

पंचम वर्ष -द्वितीय प्रश्न पत्र

नवपदार्थः निर्जरा, बंध और मोक्ष-50

समयः3 घंटा दिनांक-30.08.2018

पूर्णांक-100

प्र01 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें– 16

(निर्जरा– किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें–)

(क) लब्धि वीर्य व करण वीर्य को परिभाषित करें।

(ख) विकृति किसे कहते हैं?

(ग) शुक्ल ध्यान के लक्षण अर्थ सहित लिखें।

(घ) उपनीत– अपनीत चरक किसे कहते हैं?

(ड) एक दत्ति अभिग्रह किसे कहते हैं?

(च) सात एषणाओं में "उद्घृता" का क्या तात्पर्य है?

(बंध– किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें–)

(छ) आठ कर्मो के अनंत पुद्गल प्रदेशों की संख्या संसार के अभव्य जीवों व सिद्धों की अपेक्षा से कितनी है?

(ज) वेदनीय कर्म की स्थिति कम होने पर भी उसके हिस्से में कर्मदल सबसे अधिक क्यों आते है?

(झ) किन उत्तर प्रकृतियों का परस्पर संक्रमण नहीं होता है?

(मोक्ष– किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें–)

(ञ) निरूपग्रहता का क्या तात्पर्य है?

(ट) क्या सिद्ध सिद्ध शिला पर रहते हैं?

(ठ) कर्म रहित जीव के गति कैसे मानी गई है?

प्र02 निम्न प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें– 10

(क) निर्जरा–दर्शन विनय किसे कहते हैं? उसके प्रकारों में सुश्रूषा विनय के प्रकार अर्थ सहित लिखें– <u>अथवा</u> आत्मशुद्धि हेतु किए गए तप से कर्मो का क्षय किस प्रकार होता है?

(ख) बंध और मोक्ष– कर्म जीव को किस प्रकार पराधीन बना देता है <u>अथवा</u> सम्यक् ज्ञान–दर्शन–चारित्र व तप से सिद्धि कम किस प्रकार बनता है?

प्र03 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार सहित लिखें– 24

(क) निर्जरा–मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से कौन से आठ विशेष बोल उत्पन्न

Scanned by CamScanner

होते हैं? वर्णन करें। अथवा तप को अभ्युदय व कर्म क्षय दोनों का हेतु किस प्रकार कहा गया है?

(ख) बंध और मोक्ष– प्रदेश बंध का विवेचन करें अथवा कर्मो के सम्पूर्ण क्षय की प्रकिया लिखें।

(अवबोध तपधर्म से बंध. व विविध तक–30)

प्र04 किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर एक दो वाक्य में लिखें– 18

(क) चार भाव कहां होते हैं?

(ख) क्या अशुभ कर्म के फल को रोका जा सकता है?

(ग) उपशम भाव कर्म की अवस्था मात्र है, उसे संवर कैसे माना गया?

(घ) क्या शुभ–अशुभ कर्म का बंध युगपत् होता है?

(ड) आत्म प्रदेश अधिक हैं या कर्म प्रदेश?

(च) जीव के कितने क्रियाऐं होती हैं?

(छ) क्या फल प्राप्ति में द्रव्य, क्षेत्र, काल आदि की कोई भूमिका है?

(ज) दर्शनावरणीय कर्म की प्रकृति सत्यानर्द्धि का क्या अर्थ है?

(झ) सन्निपातिक भाव कैसे निष्पन्न होता है?

(ञ) प्रतिसंलीनता किसे कहते हैं? उसके कितने प्रकार हैं?

(ट) एक भाव कहां होता हैं?

प्र05 कोई दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए– 12

(क) अंतराल गति में स्थूल शरीर व स्थूल योग नहीं रहता, फिर कर्म बंध कैसे व किसके होता है, व कार्मण शरीर का संबंध आत्मा के साथ अनादिकाल से है, अनादिकाल से संबंधित इस शरीर का अलगाव कैसे होगा?

(ख) भवोपग्राही कर्म किसे कहते हैं? एक कर्म की वर्गणा अधिकतम कितने भव तक भोगी जा सकती है?

(ग) कर्म वर्गणा का बंध होता है, वे एक कर्म से संबंधित होती हैं, या आठों कर्मो से तथा बंधने वाली कर्म वर्गणाएं क्या आठों कर्मो में समान रूप से विभक्त होती है या न्यूनधिक?

(घ) वीतराग कौन होता है, क्या वीतराग के कर्म बंध होता है?

श्रावक संबोध–20

प्र06 कोई चार पद्य पूरा करें– 12

(क) उस दिन उपवास.....रही रहे। इस पद्य को पूरा करें।

(ख) शिष्टता संयम..... भरते ही रहें। इस पद्य को पूरा करें।

(ग) जैन संस्कृति का एक अनुष्ठान– रात्रि भोजन विरमण। वाला पद्य पूरा करें।

(घ) जिस पद्य में बांदर दुलह की दक्षता सब के लिए अनुकरणीय है, वो पद्य

Scanned by CamScanner

पूरा करें।

(ड) संयुक्त परिवार प्रथा में जो टूट–फूट हो गई है, उसमें किस प्रकार परिवर्तन कर यहां संस्कार उपलब्ध हो, इन भावों से रचित पद्य को पूरा करें।

(च) गौतम अपनी भूल को जानते ही उसका परिशोधन करने आनंद के पास आते हैं– वो पद्य पूरा करें।

प्र07 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें। 8

(क) संबोध पुस्तक में कौन से तीन ग्रन्थ हैं और वे कौन सा प्रशिक्षण देने वाले हैं?

(ख) जैनतत्त्व विद्या का विशेषज्ञ बनने के लिए कौन सी त्रिपदी का गंभीर ज्ञान आवश्यक है।

(ग) प्रतिदिन निश्चित रूप से करणीय कौन से आध्यात्मिक कार्यो का समावेश ध्रुवयोग में होता है?

(घ) कौन सी अनुप्रेक्षाओं के प्रयोग से संस्कार परिवर्तन का काम आसानी से हो सकता है।

(ड) जैन पंचाग के अनुसार संवत्सर का प्रांरभ कब होता है? संवत्सर का क्या अर्थ है?

(च) श्रावक के गुणात्मक विशेषणों में से धर्मप्रलोकी व सुव्रत का तात्पर्य क्या है?

Scanned by CamScanner